SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A.(Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of PSY
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U, Ara

पूर्वाग्रह किसी व्यक्ति, जाति या समूह आदि के विषय में बगैर किसी प्रकार की जाँच परख लिये हुए पहले से ही ले लिया गया निर्णय होता है जिसका प्रायः कोई भी वैज्ञानिक अथवा तार्किक आधार नहीं होता है। भारत जैसे विशाल देश के लिये यह एक बहुत ही बड़ी समस्या है, क्योंकि यहाँ विभिन्न प्रकार की जातियों, धर्मों एवं मतों को माननेवाले लोग रहते हैं। अध्ययन यह बतलाते हैं, कि भारत में होने वाले साम्प्रदायिक दंगों, जातीय तनाव, धार्मिक तथा सामाजिक टकराव आदि के पीछे कई बार पूर्वाग्रहों का हाथ होता है। इससे निपटने के लिए सरकार एवं समाजमनोवैज्ञानिकों की यह दायित्व होता है कि इसके दूर करने की उपायों का खोज करें। मनोवैज्ञानिकों ने भारत के संदर्भ में इसको दूर करने के कुछ उपाय बताये हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

(1) ~~समजातीय~~ अन्तर्जातीय विवाह :- भारतीय संस्कृति में समजातीय विवाह की मान्यता प्रचलित है। इसके स्थान पर अन्तर्जातीय विवाह को प्रश्रय एवं बढ़ावा देना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति अपने जाति से अलग दूसरी जाति में विवाह करता है तो इसके लिये सरकार एवं समाज दोनों स्तर पर बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। इससे जातिगत दंगे एवं जातिगत पूर्वधारणा को विराम लग जायेगा। जब तक अन्तर्जातीय ढंग से विवाह बड़े पैमाने पर नहीं होंगे इस प्रकार की पूर्वधारणाएँ नहीं खत्म होंगी।

इसी प्रकार अन्तर्धर्म विवाह यानी एक धर्म का दूसरे धर्म के लोगों में आपसी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित होने से भी पूर्वाग्रह को खत्म करने में सहायता मिल सकती है। अतः भारत में अन्तर्जातीय तथा अन्तर्धार्मिक विवाह को प्रश्रय दिया जाना चाहिये। Klineberg (1950) का इस संदर्भ में कहना है कि ऐसा करने से पूर्व जनमत को उसके अनुकूल बनाना आवश्यक है।

(2) शिक्षा :- इस संदर्भ में कई अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य में किये गये। निष्कर्ष के तौर पर पाया गया कि शिक्षित लोगों में पूर्वधारणाएँ कम पाई जाती हैं। ज्यों जैसे-जैसे समाज के लोगों में शिक्षा का स्तर बढ़ते जाता है Prejudice में कमी आती जाती है। इसके लिये औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों स्तर पर बच्चों को उचित एवं संतुलित शिक्षा देने की आवश्यकता है। यदि इन दोनों तरह की शिक्षा व्यवस्था में लचीलापन एवं निष्पक्षता नहीं होगी तो Prejudice घटने के बजाय बढ़ जायेगी। बच्चों की शिक्षा का पाठ्यक्रम भाईचारा बढ़ानेवाला होना चाहिए। धार्मिक शिक्षा और इस तरह की शिक्षा देनी वाली संस्थाओं पर सख्त निगरानी होनी चाहिए जो बच्चों के मस्तिष्क में जहर भरते हैं। उसके लिए मनोवैज्ञानिकों ने Cultural Assimilator Method विकसित किया है जिसमें दूसरे प्रजाति एवं रहन सहन वालों के विषय में उनके मूल्यों के विषय में शिक्षा एवं जानकारियाँ दी जाती हैं। Cultural exchange आदि NSS एवं NCC द्वारा कराया जाता है, जिसमें दूसरे प्रांत के बच्चों के साथ रहने एवं उनकी संस्कृति को समझने तथा आदान-प्रदान कराया जाता है। यह एक अच्छी पहल है। ट्रियांडिस ने अपने अध्ययन में पाया कि जब उच्च शिक्षा लोग प्राप्त कर लेते हैं तो उनमें Prejudice कम हो जाती है।

(3) विधान :- भारत जैसे देश में सख्त विधान की आवश्यकता है। सरकार को पूर्वाग्रह एवं वैसे दकियानुसी लोगों पर सख्त कार्रवाई करनी चाहिए जो तनाव बढ़ाते हैं या समाज तोड़ते हैं। किसी भी तरह की सामाजिक भेदभाव एवं तनाव फैलानेवाले लोगों पर कठोर एवं उचित वैधानिक कार्रवाई होनी चाहिए।

(4) नागरिक संगठन :- पूर्वधारणा को कम करने के लिये सरकार के अलावे नागरिक संगठनों एवं आम जनता को भी आगे आने की आवश्यकता है। अतः ऐसे संगठनों को निर्माण करने की आवश्यकता है जिसमें सभी धर्मों एवं जातियों के लोगों को एवं अन्य प्रबुद्ध लोगों को शामिल किया जाए। इन संगठनों को पूर्वधारणा को दूर करने के लिए विभिन्न उपायों का सहारा लेना चाहिए तथा सरकार के नियमों का पालन करने के लिये लोगों को प्रेरित करें।

(5) पूर्वाग्रह विरोधी प्रचार :- पूर्वाग्रह को समाप्त करने में प्रचार के माध्यमों की अहम भूमिका हो सकती है। रेडियो, टीवी, सिनेमा में पूर्वाग्रह कम करनेवाले कहानियों विचारों आदि को प्रसारित कराना चाहिए। इस तरह की Documentary film, short film, video आदि बना कर लोगों तक पहुँचाया जाए जिससे पूर्वाग्रह में कमी आए। Simpson एवं Singer का अध्ययन बताता है प्रजातीय पूर्वधारणा दूर करने में उस पर बनी फिल्म शिक्षा से अधिक कारगर है।

(6) व्यक्तित्व परिवर्तन :- पूर्वाग्रह का गहरा सम्बन्ध कुछ खास प्रकार के व्यक्तित्व वाले लोगों से होता है। अतः इसके लिए लोगों के व्यक्तित्व एवं सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है जिसमें मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों एवं कुछ खास प्रकार के मनोवैज्ञानिक उपचारात्मक प्रविधियों जैसे खेल चिकित्सा, परामर्श आदि का इस्तेमाल लाभदायक हो सकता है।

(7) अलगाव विरोधी नीति :- अलगाव विरोधी नीति से तात्पर्य ~~जैसे कि~~ किसी भी जाति या वर्ग के लोगों को अलग नहीं समझा जाना चाहिए। समायोजित एक योजना जिसमें सभी जाति एक स्थान पर एक छत के नीचे रहें, ऐसा होना चाहिए। इससे एक दूसरे को समझने का मौका मिलता है। आपसी भाईचारा बढ़ती है और पूर्वाग्रह दूर होती है। हिन्दू विश्वविद्यालय, मुस्लिम विश्वविद्यालय ऐसे शैक्षणिक संस्थाओं को प्रोत्साहित नहीं करनी चाहिये।

(8) भूमिका अदा (Roleplaying) इसमें वैसे व्यक्ति के लोगों को

ऊँचे पदों पर नियुक्ति में परक्रम दी जाती चाहिए जो दबे कुचले हैं। इससे उस वर्ग के लोगों की स्थिति बढ़ती है और दूसरे लोगों की धारणाएँ बदलती हैं।

स्पष्ट अनुमान : बहुत बार देखा जाता है कि अधूरा ज्ञान एवं सूचना एवं शिक्षा का अभाव पूर्वधारणा को बढ़ाने एवं बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस तरह की पूर्वधारणाएँ को खत्म करने के लिए एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के लोगों के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी देने की आवश्यकता है। यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दू-मुस्लिम दोनों सम्प्रदाय के लोगों को यह स्पष्ट जानकारी दी जाए कि दोनों धर्मों एवं लोगों में कोई अन्तर नहीं है। मानव-मानव सभी एक समान हैं। केवल पंडित एवं मौलवी खाई बढ़ाकर अपनी रोटी सेकते हैं। इस तरह भाईचारा एवं प्रेम बढ़ाकर पूर्वाग्रह को मिटाया जा सकता है।

छुआ छूत का बिल्कुल समापन : जो भी व्यक्ति दूसरे जाति या वर्ग के लोगों से छुआछूत की भावना पालते हैं उन्हें समझाकर और उचित जानकारी देकर इसे मिटाने की आवश्यकता है। हालाँकि सरकार इसे गैरकानूनी घोषित कर चुकी है पर आज भी हमारे समाज में विद्यमान है। इसे दूर कर बहुत हद तक Prejudice को कम किया जा सकता है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत में पूर्वाग्रह अधिकांश स्थिति में देश की एकता अखण्डता एवं विकास के लिए घातक है। इसको दूर करने के लिए सरकार एवं समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति काफी काम कर रहे हैं। पहले से काफी हद तक कमियाँ भी आई हैं। इसकी समापन के लिए उपर्युक्त उपायों का सहारा लिया जाना जरूरी है। तभी हमारे देश का बहुमुखी विकास हो सकेगा।

=

29·8·2020